PGCAR

अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र

(पी.जी.सी.ए.आर.)

सत्रीय कार्य

2022

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र

(पी.जी.सी.ए.आर.)

एम.टी.टी. 031–033

सत्रीय कार्य 2022

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.ए.आर.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र कार्यक्रम की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है,) अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र कार्यक्रम में अध्ययन के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम से संबंधित एक सत्रीय कार्य करना है। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है तथा इनमें न्यूनतम निर्धारित अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ संपन्न करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम में सत्रीय कार्यों का विभाजन इस प्रकार है :

कार्यक्रम	**अध्ययन केंद्र पर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि**	
	जनवरी 2022 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	**जुलाई 2022 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए**
एम.टी.टी. 031 अनुवाद एवं रूपांतरण के विविध आयाम	31.3.2022	30.9.2022
एम.टी.टी. 032 अनुवाद, रूपांतरण एवं मुद्रित माध्यम	31.3.2022	30.9.2022
एम.टी.टी. 033 स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम	31.3.2022	30.9.2022

नोट : अंतिम तिथि के उपरांत सत्रीय कार्य स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

उद्देश्य : अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र कार्यक्रम (पी.जी.सी.ए.आर) के अंतर्गत अनुवाद सिद्धांत, अनुवाद के क्षेत्र, रूपांतरण की अवधारणा और आयाम, रूपांतरण एवं अंतर माध्यम अनुवाद, प्रतिलिप्यधिकार, मुद्रित माध्यम एवं अनुवाद, स्क्रिप्ट लेखन का स्वरूप और प्रक्रिया, दृश्य–श्रव्य माध्यमों के आयाम, प्रकार और रूपांतरण के विविध क्षेत्रों पर विचार करते हुए उसके प्रक्रियापरक पहलुओं पर चर्चा की गई है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और आप उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि

अध्ययन के दौरान आपको जो जानकारी प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में आप विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद और रूपांतरण विषय के रूप में भली प्रकार से समझ सकें।

सत्रीय कार्य करते समय ध्यान रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातें

- उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होंगी; और
- अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार अपनी नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें। नामांकन संख्या की पुष्टि अपने परिचय–पत्र तथा पाठ्य–सामग्री पर दिए गए पते से भी कर लें।
- अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....

नाम : .....

पता : .....

.....

.....

.....

दूरभाष / मोबाइल : .....

पाठ्यक्रम कोड : .....

पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....

सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर : .....

अध्ययन केंद्र का नाम : ..... तिथि : .....

- पाठ्यक्रम कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। कागज की बायीं ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तथा दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में आपसे दो तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। जिन इकाइयों पर सत्रीय कार्य आधारित हैं उन्हें भी ठीक से पढ़कर संदर्भों से मिला लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी का संकलन कर उसे व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ। तत्पश्चात् संगत जानकारी पर आधारित अपने उत्तर स्पष्ट रूप से लिखें।
- सैद्धांतिक प्रश्नों को पहले भली–भाँति समझ लें तत्पश्चात् विभिन्न संकल्पनाओं का भी अध्ययन करें और उत्तर का खाका तैयार करें। इन प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षिप्त एवं यह स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए कि इस प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में उत्तर का सार एवं मुख्य बिंदुओं पर जोर होना चाहिए। आवश्यक हो तो विश्वविद्यालय द्वारा दी गई अध्ययन सामग्री के अलावा विषय से संबंधित अन्य पुस्तकों, संदर्भों आदि का भी अध्ययन करें। आपके उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों से संबद्ध हों तथा उसमें निहित सभी मुख्य बातें शामिल हों।

सत्रीय कार्य समापन से पूर्व इन बिंदुओं पर भी ध्यान दीजिए :

(क) आपके उत्तर आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति प्रश्न के पूर्णतया अनुकूल हो।

(ख) आपके उत्तर अनावश्यक रूप से विस्तारित या संक्षिप्त न हों।

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

(घ) आपके उत्तर हस्तलिखित होने चाहिए। आपके उत्तर विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों की नकल न हों। यदि आप ऐसा करते हैं तो कम अंक मिलेंगे।

(ङ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें। यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

(च) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें। प्रत्येक उत्तर के साथ उसकी प्रश्न संख्या भी अवश्य लिखें।

(छ) **सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे मूल्यांकन हेतु अपने अध्ययन केंद्र अर्थात अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, ब्लॉक–15सी, इग्नू, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 को ही प्रेषित करें।**

(ज) सत्रीय कार्य को जमा कराते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से प्राप्ति दर्ज करा लें ताकि उसे आप परीक्षा फॉर्म के साथ संलग्न कर सकें अथवा अपने रिकॉर्ड में रख सकें।

(झ) यदि आपने क्षेत्र/अध्ययन केंद्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो भी आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक कि विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने और नए अध्ययन केंद्र की सूचना नहीं भेज दी जाती।

एम.टी.टी.–031 : अनुवाद एवं रूपांतरण के विविध आयाम
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
(टी.एम.ए.)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.ए.आर.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–031
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./2022

अंक : 100

नोट : प्रश्न संख्या 1 से 9 का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. अनुवाद के अर्थ, स्वरूप और महत्व पर प्रकाश डालिए। 10

2. अनुवाद के उभरते मुद्दों एवं नई दिशाओं की चर्चा कीजिए। 10

3. अनुवाद के प्रमुख प्रकारों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10

4. रूपांतरण से आपका क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। 10

5. रूपांतरण एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है? इस कथन का विवेचन कीजिए। 10

6. अनुवाद में आए सांस्कृतिक मोड़ के महत्व का विश्लेषण कीजिए। 10

7. अनुवाद की प्रक्रिया एवं चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। 10

8. रूपांतरण के संदर्भ में प्रतिलिप्यधिकार की चर्चा कीजिए। 10

9. वैश्विक मनोरंजन एवं रूपांतरण पर निबंध लिखिए। 10

10. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 2×5= 10

    (क) प्रतिलिप्यधिकार

    (ख) अनुवाद एवं रूपांतरण का अंतःसंबंध

एम.टी.टी.–032 : अनुवाद, रूपांतरण एवं मुद्रित माध्यम
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
(टी.एम.ए.)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.ए.आर.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–032
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./2022
अंक : 100

नोट : प्रश्न संख्या 1 से 9 का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. 'जनसंचार माध्यम की संकल्पना एवं स्वरूप पर निबंध लिखिए। 10

2. मुद्रित माध्यमों में रूपांतरण के महत्व पर प्रकाश डालिए। 10

3. कहानी के रूपांतरण की चुनौतियों की चर्चा कीजिए। 10

4. विज्ञापनों का रूपांतरण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। विवेचन कीजिए 10

5. समाचारों के रूपांतरण की समस्याओं का वर्णन कीजिए। 10

6. कविता के रूपांतरण के विभिन्न आयामों को रेखांकित कीजिए। 10

7. मुद्रित माध्यमों में भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। 10

8. उपन्यास के रूपांतरण की परंपरा की चर्चा कीजिए। 10

9. मुद्रित माध्यमों में रूपांतरण के विविध प्रकार और उद्देश्यों की चर्चा कीजिए। 10

10. **निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :** 2×5=10

    (क) मुद्रित माध्यम और अनुवाद

    (ख) अन्य विधाओं का रूपांतरण

एम.टी.टी.–033 : स्क्रिप्ट, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
(टी.एम.ए.)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.ए.आर.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–033
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./2022
अंक : 50

नोट : प्रश्न संख्या 1 से 8 का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न संख्या 9 में दिए गए अंश के आधार पर स्क्रिप्ट लेखन कीजिए।

---

1. स्क्रिप्ट लेखन से क्या तात्पर्य है? वर्णन कीजिए। 10

2. स्क्रिप्ट लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। 10

3. दृश्य–श्रव्य माध्यम के प्रकारों का परिचय दीजिए। 10

4. रेडियो के लिए रूपांतरण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। विवेचना कीजिए। 10

5. डिजिटल माध्यमों के लिए रूपांतरण ने अध्ययन को सुगम बनाया है। तर्क दीजिए। 10

6. टेलीविजन के लिए रूपांतरण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। 10

7. स्क्रिप्ट लेखन एवं रूपांतरण से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए। 10

8. रंगमंच के संदर्भ में रूपांतरण की प्रक्रिया की चर्चा कीजिए। 10

9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम में आपने स्क्रिप्ट लेखन के विषय में विस्तार से अध्ययन किया है। नीचे एक कहानी का अंश दिया जा रहा है। प्रस्तुत अंश पर अंग्रेजी या हिंदी में अपनी रुचि अनुसार रेडियो अथवा टेलीविजन के लिए स्क्रिप्ट तैयार कीजिए। 20

रामेश्वर इस परीक्षा में पास हो गया था। वह सुबह समय से मोहल्ले में पहुँच जाता। एक–एक घर का दरवाजा खटखटा कर बच्चों को पुकारता। बच्चों को प्यार से और संभालकर रिक्शे में बैठाता और उनके बैग रिक्शे के पीछे लगे हैंडल पर करीने से टाँग देता। सब बच्चों को रिक्शे पर सवार कर वह हमारे दरवाजे पर आता और मीतू को पुकारता। 'मीतू बिटिया' – वह जोर से पुकारता और इधर मीतू गले में पानी की बोतल टाँगे बाहर आती। स्कूल जाते वक्त मीतू अक्सर रोती रहती थी। स्कूल ड्रेस, गले में पानी की बोतल और आंखों में मोटे–मोटे आंसू। मैं उसकी आंखों में काजल लगाने से बचती थी क्योंकि रोने पर उसकी आंखों से बहकर काजल उसके गालों पर आ जाता जिसे अपने हाथों से मसल कर वह पूरे चेहरे पर फैला लेती। मीतू को रोता देख रामेश्वर कहता, '' हो मीतू बिटिया, रोती काहे हो। अरे इस्कूल मा त खेलन जाइत हयं। खेलबू नाहि? हयं?'' और वह तरह–तरह की आवाज़ें निकाल उसे हंसाने की कोशिश करता। वह दौड़कर मेरे हाथ से मीतू का बैग लेता और

ठीक अपने खास अंदाज में 'राम–राम' बोलता। एक हाथ में मीतू का बैग थामे और दूसरे से उसे गोद में उठाए वह रिक्शे की ओर बढ़ता और रिक्शे की सबसे महफूज जगह पर मीतू को बैठा घंटी बजाता, गुनगुनाता वह अपने रास्ते पर चल देता।

आपने अगर बच्चों को स्कूल ले जाने वाला रिक्शा देखा हो, तो आपको अंदाजा होगा। रामेश्वर का यह रिक्शा तीन पहियों पर चलने वाली गाड़ी पर रखा एक पेटीनुमा बक्सा था, जिसके चारों ओर जाली या यूं कहिए कि खिड़कियां लगी रहती हैं और अंदर बैठने के लिए तीन दीवारों के साथ लकड़ी की फट्टानुमा सीट बनी रहती है और एक ओर यानी उसके पिछली तरफ दरवाज़ा। रामेश्वर ने उस दरवाज़े पर बड़ी और मजबूत कुंडी लगाई हुई थी ताकि किसी भी तरह झटका लगने या कहीं टकराने पर वह दरवाजा खुलने न पाए और बच्चे उसमें महफूज रह सकें। इसी कुंडी पर वह बच्चों के स्कूल बैग टांगता था।